आरती श्री जिनराज की

आरती श्रीजिनराज तिहारी, करमदलन संतन हितकारी।। टेक।।
सुर-नर-असुर करत तुम सेवा, तुमही सब देवन के देवा।। आरती श्री... १
पंच महाव्रत दुद्धर धारे। राग रोष परिणाम विदारे।। आरती श्री... २
भव-भय-भीत शरन जे आये। ते परमारथ-पंथ लगाये।। आरती श्री... ३
जो तुम नाम जपै मनमांही। जनम-मरन-भय ताको नाहीं।। आरती श्री... ४
समवसरन-संपूरन शोभा। जीते क्रोध - मान - छल - लोभा।। आरती श्री... ५
तुम गुण हम कैसे करि गावैं। गणधर कहत पार नहिं पावैं।। आरती श्री... ६
करुणासागर करुणा कीजे। 'द्यानत' सेवक को सुख दीजे।। आरती श्री... ७

आरती श्री शान्ति जिनेश्वर

ॐ जगत के शान्ति दाता, शान्ति जिनेश्वर जय हो तेरी।। ॐ....
किसको मैं अपना कहूँ, कोई नजर आता नहीं।
इस जहाँ में आप बिन कोई मन भाता नहीं।।
तुम ही हो त्रिभुवन विधाता, शान्ति जिनेश्वर जय हो तेरी।। ॐ....
तेरी ज्योति से जहाँ में ज्ञान का दीपक जला।
तेरी अमृत वाणी से ही राह मुक्ति का मिला।।
शीश चरणों में झुकाता, शान्ति जिनेश्वर जय हो तेरी।। ॐ....
मोह माया में फंसा, तुमको भी पहचाना नहीं।
ज्ञान हैं न ध्यान दिल में धर्म को जाना नहीं।।
दो सहारा मुक्तिदाता, शान्ति जिनेश्वर जय हो तेरी।। ॐ....
वन के सेवक हम खड़े हैं, स्वामी तेरे द्वार पे।
हो कृपा तेरी तो बेड़ा पार हो संसार से।।
तेरे गुण स्वामी मैं गाता, शान्ति जिनेश्वर जय हो तेरी।।
ॐ जगत के शान्ति दाता....